

‘रेल दर्पण’ के पिछले कुछ अंकों से हमने यह नया स्तम्भ ‘जिंदादिली और उल्लास के हरकारे’ शुरू किया, जिसे काफी सराहा गया है। इस स्तम्भ के अंतर्गत हम अपने पाठकों का परिचय पश्चिम रेल परिवार के कुछ ऐसे जिंदादिल इंसानों से करवाते हैं, जो अपने कलात्मक हुनर, मिलनसार व्यवहार और अंतर्मन में बसे उल्लास की निरंतर अभिव्यक्ति से न सिर्फ अपना और अपने संगठन का नाम रोशन करते हैं, बल्कि अपनी उपलब्धियों से अपने सहकर्मियों और परिजनों के लिए जिंदादिली और उत्साह का प्रेरणा स्रोत भी बनते हैं। ऐसे 2 जोशीले हरकारों का सचित्र परिचय इस प्रेरणादायी स्तम्भ की इस अगली कड़ी में हम पेश कर रहे हैं। अगर आपके विभाग, मंडल या कार्यालय में अथवा आपके परिचित रेलकर्मियों के परिवारजनों में भी ऐसे हरकारे मौजूद हों, तो आप उनका सचित्र परिचय हमारे वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर को प्रेषित कर सकते हैं। योग्य पाये जाने पर उनका प्रकाशन ‘रेल दर्पण’ के अगले अंक में इस स्तम्भ की अगली कड़ी के अंतर्गत किया जा सकेगा।

 प्रधान सम्पादक

मानव सेवा की बेहतरीन मिसाल पश्चिम रेलवे की नर्स श्रीमती चावड़ा

ईश्वर ने जब इस सृष्टि का निर्माण किया, तो उसे निश्चित रूप से पता था कि इतनी बड़ी कायनात को चलाने के लिए किसी न किसी जज्बाती करिश्मे की जरूरत पड़ेगी और इसीलिए उसने ममता, स्नेह, त्याग और सेवा जैसी तमाम कोमल भावनाओं से परिपूर्ण नारी शक्ति को भी ईजाद किया। आज वैश्वीकरण के दौर में जहाँ नारी पुरुष से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है, वहीं अब भी कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ नारी का एकाधिकार बरकरार है। बच्चे को जन्म देने से लेकर उसके पालन-पोषण तक की अहम जिम्मेदारी जितनी खूबी से महिला निभा सकती है, उसकी बराबरी करना किसी पुरुष के लिए लगभग असम्भव है। नारी एकाधिकार वाले अनेक पेशों में से एक महत्त्वपूर्ण पेशा है नर्सिंग, जिसमें आज भी अधिकांश महिलाएँ अपनी भूमिका को बखूबी निभा रही हैं। इसी पेशे के अंतर्गत मानव सेवा की अद्वितीय भावना का प्रदर्शन करते हुए पश्चिम रेलवे के गांधीधाम स्थित उप मंडलीय चिकित्सालय में कार्यरत नर्सिंग सिस्टर श्रीमती निमिषाबेन चावड़ा ने वर्ष 2010-11 के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा प्रदान किया जाने वाला ‘राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल नर्सिंग अवॉर्ड’ भारत की तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल के हाथों प्राप्त कर न सिर्फ पश्चिम रेलवे, बल्कि गांधीधाम और गुजरात प्रदेश को भी गौरवान्वित किया।

‘लेडी विद द लैम्प’ के नाम से विश्व विख्यात हुई आधुनिक नर्सिंग की जन्मदाता फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जन्म दिवस पर 12 मई को सम्पूर्ण विश्व में मनाये जाने वाले ‘विश्व नर्सिंग दिवस’ के अवसर पर पिछले वर्ष नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में आयोजित गरिमापूर्ण समारोह में श्रीमती चावड़ा को महामहिम राष्ट्रपति महोदया द्वारा ‘राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल नर्सिंग अवॉर्ड’ के रूप में विशेष प्रशस्ति पत्र एवं 50 हजार रु. का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि इटली में जन्मी तथा विश्व में सबसे पहले सेंट थॉमस अस्पताल लंदन में व्यावसायिक नर्सिंग की शुरुआत करने वाली फ्लोरेंस नाइटिंगेल की स्मृति में वर्ष 1912 में रेडक्रॉस सोसायटी ने



★ तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल के हाथों ‘राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल नर्सिंग अवॉर्ड’ प्राप्त करती हुई पश्चिम रेलवे गांधीधाम चिकित्सालय की नर्सिंग सिस्टर श्रीमती निमिषाबेन चावड़ा। साथ में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलामनबी आजाद भी दिखाई दे रहे हैं।

**राष्ट्रपति महोदया
के हाथों मिला
राष्ट्रीय फ्लोरेंस
नाइटिंगेल नर्सिंग अवॉर्ड**

फ्लोरेंस नाइटिंगेल अवॉर्ड की शुरुआत की, जो बेहतरीन सेवा करने वाली नर्सों को सम्मानित करने के लिए दिया जाता है। समूचे पश्चिम रेलवे के लिए यह अत्यंत गौरव की बात है कि उनकी अपनी रेल कर्मी श्रीमती निमिषाबेन चावड़ा को वर्ष 2010-11 के दौरान उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुना गया। 30 दिसम्बर, 1975 को जन्मी श्रीमती निमिषाबेन ने 23 अक्टूबर, 2001 को स्टाफ नर्स के रूप में रेल सेवा में

प्रवेश किया, जहाँ 13 सितम्बर, 2004 को उन्हें नर्सिंग सिस्टर के पद पर पदोन्नति मिली और वर्तमान में भी वे इसी पद पर रहकर एक विनम्र एवं कुशल सेविका की भूमिका को बखूबी निभा रही हैं।

श्रीमती निमिषाबेन ने अपने पद के सामान्य दायित्वों के अलावा पश्चिम रेलवे के गांधीधाम चिकित्सालय में मरीजों की देखभाल प्रणाली को बेहतरीन बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस अस्पताल के ऑपरेशन थियेटर में नियुक्त नियमित स्टाफ नर्स की गैर मौजूदगी में श्रीमती निमिषाबेन द्वारा विभिन्न महत्वपूर्ण ऑपरेशनों में डॉक्टरों की सहायता करने हेतु अभूतपूर्व इच्छा शक्ति एवं सेवा भावना का प्रदर्शन किया गया। मानवता के प्रति आपके अगाध समर्पण की बदौलत ही इस अस्पताल के ऑपरेशन थियेटर को साफ-सुथरा रखना एवं सभी ऑपरेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न करना सम्भव हो पाता है। अपनी नियमित ड्यूटी के अलावा आपातकालीन परिस्थितियों में इस थियेटर में किये जाने वाले सभी तरह के ऑपरेशनों में आप मौजूद रहकर अपनी ओर से हरसम्भव सहायता सुनिश्चित करती हैं। वर्ष 2010-11 के दौरान इस थियेटर में किये गये सामान्य शल्य चिकित्सा, प्रसूति तथा अस्थि रोग चिकित्सा के लगभग 100 बड़े एवं 220 छोटे ऑपरेशनों की सफलता में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

रेलकर्मियों एवं उनके परिजनों को नियमित स्वास्थ्य जाँच के लिए प्रेरित करने, उनका रिकॉर्ड रखने, रेलवे के विभिन्न विभागों और स्कूलों में आयोजित होने वाले स्वास्थ्य जाँच और रक्त दान शिविरों तथा एड्स जागरूकता अभियान के सफल आयोजन में भी श्रीमती निमिषाबेन हमेशा अहम योगदान देती हैं। इनके अलावा राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत टीबी के मरीजों का रिकॉर्ड रखने, उनकी समुचित देख-भाल करने और उनकी नियमित खुराक सुनिश्चित करने में भी आपने सदैव असाधारण सेवा भावना का प्रदर्शन किया है। इतना ही नहीं, रेल दुर्घटनाओं के मौकों पर आपने कई बार आपातकालीन सेवाएँ भी प्रदान कीं और अपनी असाधारण योग्यता का

प्रदर्शन किया। आपके सेवा काल के दौरान आपके खिलाफ कभी भी कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई, बल्कि अपनी अतुलनीय मिलनसारिता और सेवाओं की बदौलत आपने समाज में एक सम्मानजनक छवि बनाई है। श्रीमती चावड़ा की अभिनव पहल के फलस्वरूप इस चिकित्सालय के सभी विभागों में एक मानक प्रणाली की शुरुआत की गई, जिसके माध्यम से मरीजों के चैक अप तथा इलाज में लगने वाले लम्बे इंतजार को उल्लेखनीय रूप से घटाया जा सका। समय की पाबंदी की आपकी अच्छी आदत आपके सभी सहकर्मियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। चिकित्सालय में किये जाने वाले ईसीजी, सोनोग्राफी एवं तमाम तरह की जाँच यथासमय एवं सही ढंग से सुनिश्चित करने में भी श्रीमती चावड़ा का सराहनीय सहयोग रहता है। आप इस अस्पताल की एक ऐसी निष्ठावान, सहयोगी और हर तरह की ड्यूटी के लिए सदैव तत्पर रहने वाली कर्मचारी हैं, जिन्होंने इस चिकित्सालय की प्रतिष्ठा को बढ़ाने में अहम योगदान दिया है। इसकी बदौलत पूर्व में भी श्रीमती चावड़ा



★ पश्चिम रेलवे के गांधीधाम चिकित्सालय की नर्सिंग सिस्टर श्रीमती निमिषाबेन चावड़ा 'राष्ट्रीय फ्लोरेस नाइटिंगेल नर्सिंग अवॉर्ड' के विशेष प्रशस्ति पत्र सहित रेलवे महिला कल्याण केन्द्रीय संगठन की अध्यक्ष श्रीमती पूनम मित्तल और पश्चिम रेलवे महिला समाज सेवा समिति की अध्यक्षा श्रीमती अंजलि कुमार के साथ।

अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं, जिनमें वर्ष 2006 में मिला एरिया मैनेजर पुरस्कार, 2008 में मंडल रेल प्रबंधक की ओर से मिला 'वुमन ऑफ द मंथ'

पुरस्कार, इसी वर्ष मिला अस्पताल अधीक्षक पुरस्कार तथा वर्ष 2009 में मिला जीएम अवॉर्ड मुख्य रूप से शामिल हैं।

अपनी असाधारण सेवा भावना और प्रतिष्ठापूर्ण उपलब्धि से पश्चिम रेल संगठन को गौरवान्वित करने वाली श्रीमती निमिषाबेन अपनी कामयाबी का श्रेय अपने पारिवारिक संस्कारों और परिजनों से मिलने वाले उल्लेखनीय सहयोग को देती हैं। जन परिवहन के सशक्त माध्यम के रूप में लाखों मुसाफिरों को रोजाना उनकी मंजिलों तक पहुँचाने वाली पश्चिम रेलवे को श्रीमती निमिषाबेन जैसी उत्कृष्ट कर्मचारी पर सचमुच नाज है। रेलवे महिला कल्याण केन्द्रीय संगठन की अध्यक्ष श्रीमती पूनम मित्तल और पश्चिम रेलवे महिला समाज सेवा समिति की अध्यक्ष श्रीमती अंजलि कुमार द्वारा भी पिछले दिनों अपने गांधीधाम प्रवास के दौरान श्रीमती निमिषाबेन चावड़ा की उल्लेखनीय सेवाओं को मुक्त कंठ से सराहा गया।



जादूगर दिग्विजय का अनूठा प्रयोग

अंध विश्वास के निर्मूलन हेतु जादू का सदुपयोग

जादू का नाम आते ही हमारी आँखों के सामने तरह-तरह के चमत्कार घूमने लगते हैं, जो हमारे तन-मन को रोमांचित करते हैं। आम तौर पर जादू के जरिये दर्शकों का स्वस्थ मनोरंजन किया जाता है, लेकिन जब इस अनूठी कला का सदुपयोग समाज में फैले अंध विश्वास को दूर करने के लिए किया जाता है, तो इसकी महत्ता काफी बढ़ जाती है और यह जादुई कला एक सार्थक मुकाम हासिल करती है। इस अनोखी जादूगरी का ऐसा ही सार्थक उपयोग करने वाले एक जादूगर हमारे पश्चिम रेल परिवार में भी मौजूद हैं, जो पिछले 30 वर्षों से अधिक समय से अपनी जादूगरी की कला का सदुपयोग महाराष्ट्र और गुजरात के विभिन्न गाँवों में जाकर लोगों में फैले अंधविश्वास और धार्मिक भ्रांतियों को दूर करने का पुनीत कार्य कर रहे हैं। जिंदादिली और उल्लास के इस हरकारे का नाम है श्री विनायक जगन्नाथ शेट, जो वर्तमान में पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल स्थित कम्प्यूटरीकृत आरक्षण कार्यालय में मुख्य आरक्षण पर्यवेक्षक (CRS) के रूप में कार्यरत हैं। 30 सितम्बर, 1960 को जन्मे श्री विनायक बचपन से ही जादू की कला के प्रति आकर्षित थे और उन्हें हमेशा यह जिज्ञासा रहती थी कि आखिर यह चमत्कार होता कैसा है? आखिरकार एक दिन उनकी जिज्ञासा और महत्वाकांक्षा को पंख मिले, जब उनकी मुलाकात अफ्रीकी देश केनिया के मूल निवासी और मुंबई आये प्रोफेसर अघानी से हुई।

उन्होंने ही तब के किशोर विनायक को अपनी जादुई कला के गुर सिखाये और जब वे ठाणे के एक जूनियर कॉलेज में 12 वीं कक्षा की पढ़ाई कर रहे थे, तो ठाणे के ही गड़करी रंगायतन सभागार में इस नन्हें जादूगर ने अपना पहला सार्वजनिक शो प्रस्तुत किया। बस फिर क्या था ? दिल में छिपे अरमानों को जब पंख मिल गये, तो खुले आसमान में उड़ान भरने से भला कौन रोक सकता था ?

जादूगर दिग्विजय के नाम से अपना जादू पेश करने वाले विनायक लगातार इस क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे और उनका हुनर दिन-ब-दिन निखरता रहा। बाद में जब 20 नवम्बर, 1984 को उन्हें पश्चिम रेलवे की नौकरी मिल गई, तो रोजी-रोटी की मूलभूत चिंता खत्म हो गई और जादूगरी के अपने हुनर को उन्होंने अपने प्रमुख शौक के रूप में जारी रखा। बाद में आप ऑल इंडिया मैजिक एसोसिएशन के सदस्य भी बने और अब तक ठाणे, मुंबई, जलगाँव, भुसावल, नागपुर, चेन्नई, हैदराबाद, बैंगलोर, कोलकाता और नई दिल्ली सहित अनेक शहरों और उनके ग्रामीण इलाकों में अनगिनत जादुई शो पेश कर चुके हैं। जादूगर दिग्विजय को लड़की के दो टुकड़े करने, तलवार की नोक पर उसे लिटाने और बक्से में से गायब कर देने जैसे बड़े जादुई करिश्मे दिखाने में भी महारथ हासिल है। ग्रामीण इलाकों के अपेक्षाकृत कम पढ़े-लिखे लोगों को वे जादू दिखाकर समझाते हैं कि ये सारे चमत्कार हाथ की सफाई से सम्भव होते हैं, इसलिए ऐसे ढोंगी-पाखंडी

बाबाओं के बहकावे में कभी न आये, जो चमत्कार दिखाकर भोले-भाले ग्रामीणों को लूटते हैं। इस तरह सामाजिक जागृति के जरिये समाज और देश की सेवा करने में उन्हें जो अद्भुत सुख मिलता है, उसे वे शब्दों में बयान नहीं कर सकते। आप 5 जून, 2011 को द सोसायटी ऑफ इंडियन मैजिशियन्स, मुंबई द्वारा कर्नाटक संघ हॉल, माटुंगा में आयोजित इंटरनेशनल मैजिक कन्वेंशन 'खुल जा सिम-सिम, 2011' के अलावा मैसूर मैजिक सोसायटी द्वारा 22 एवं 23 अप्रैल, 2011 को मैसूर में आयोजित प्रथम अखिल भारतीय मैजिक सम्मेलन और हावड़ा मैजिक सर्किल द्वारा 14 एवं 15 दिसम्बर, 2002 को हावड़ा में आयोजित मैजिक सम्मेलन में भी अपने जादुई हुनर के जलवे दिखा चुके हैं। आपकी इस कला को निखारने में आपके परिवार का भी पूरा सहयोग और प्रोत्साहन मिलता है। आपकी पत्नी सौ. रेणुका शेट भी पश्चिम रेलवे के ही दादर आरक्षण कार्यालय में मुख्य आरक्षण पर्यवेक्षक के पद पर कार्यरत हैं, जबकि आपका बेटा ऋषिकेश वी. शेट इंजीनियर है और दोनों को ही क्रमशः अपने जादूगर पति और पिता पर बहुत गर्व है। समाज-सुधार के सार्थक कार्य में अपनी जादुई कला से अहम योगदान देने वाले इस अनूठे जादूगर का हम हार्दिक अभिनंदन करते हैं और उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें अनंत शुभकामनाएँ देते हैं।

गजानन महतपुरकर,

वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी (क्षेत्रीय प्रचार), चर्चगेट